राष्ट्र-प्रेम की धधकती आग : रानी दुर्गावती

सरोज गुप्ता

"झुक सकता है सूरज, दुर्गावती नहीं झुक सकती। रुक सकती है यमुना, पर रानी का वेग नहीं रुक सकता। बिजली है वह बाज़ बहादुर तक को झुलसाया जिसने अनगिनत रजवाड़ों को सबक सिखाया है जिसने" रानी दुर्गावती भारत की एक ऐसी वीरांगना, जिसने राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए कम उम्र में विपरीत परिस्थितियों में शत्रुओं से लोहा लिया। महोबा के चंदेल राजपूत राजा कीरतराय की पुत्री दुर्गावती बाँदा जिले की कालिंजर किले में 1524 ईसवी की दुर्गाष्टमी पर जन्मीं तथा गोंडवाना साम्राज्य के राजा संग्रामशाह के पुत्र दलपतशाह मडावी से विवाह करके, विवाह के चार वर्ष बाद पति गोंडराजा दलपतशाह की असमय मृत्यु के बाद, शासन की बागडोर सँभाली, अपने पुत्र वीरनारायण को सिंहासन पर बैठाकर संरक्षिका के रूप में स्वयं शासन का विस्तार करके राज्य की बहुत उन्नति की। शासन की बागडोर सँभाली। रानी दुर्गावती को तीर तथा बंदूक चलाने का अच्छा अभ्यास था। चीते के शिकार में इनकी विशेष रुचि थी। रानी ने स्वयं ही गढ़मंडला का शासन न सिर्फ सँभाला वरन् अनेक मठ, कुएँ, बावड़ी तथा धर्मशालाएँ बनवाई। अपने राज्य को समृद्ध किया। वर्तमान जबलपुर उनके राज्य का केंद्र था। अनेक उपलब्धियों के साथ अपनी दासी के नाम पर चेरीताल, अपने नाम पर रानीताल तथा अपने विश्वस्त दीवान आधार सिंह के नाम पर आधारताल बनवाया। उस समय उनके राज्य का नाम गोंडवाना था, जिसका केंद्र जबलपुर था। रानी ने इलाहाबाद के मुगल शासक आसफ़ खाँ से लोहा लेने के साथ अकबर के प्रस्ताव को भी ठुकराया। वह कहती हैं– "भीतर भरा हलाहल, है दूध जिसके मुँह पर। धोखे से मारता है, ऐसा घड़ा है अकबर।।" रानी दुर्गावती के नेतृत्व में चंदेल का यह संपन्न राज्य कई राजाओं के आक्रमण को झेलते हुआ काफी समृद्ध रहा। इस पर मालवा के मुसलमान शासक बाज़ बहादुर ने कई बार हमला किया, पर हर बार वह पराजित हुआ। मुगल शासक अकबर भी राज्य को जीतकर रानी को अपने हरम में डालना चाहता था। उसने विवाद प्रारंभ करने हेतु रानी के प्रिय सफेद हाथी (सरमन) और उनके विश्वस्त वजीर आधार सिंह को भेंट के रूप में अपने पास

भेजने को कहा। रानी ने यह मांग ठुकरा दी। इस पर अकबर ने अपने एक रिश्तेदार आसफ़ खाँ के नेतृत्व में गोंडवाना साम्राज्य पर हमला कर दिया। एक बार तो आसफ़ खाँ पराजित हुआ, पर अगली बार उसने दुगनी सेना और तैयारी के साथ हमला बोला। बहादुरी का परिचय देते हुए रानी की हुंकार इन शब्दों में व्यक्त हुई। वह कहती हैं–क्षत्रिय बाला हूँ, नहीं युद्ध से डरती हूँ। अकबर के विरुद्ध, मैं स्वयं घोषणा करती हूँ। धिक्कार है पापी तुझे, सौ बार है धिक्कार। जो बेचता स्वाधीनता को, है सरे बाजार।" रानी दुर्गावती जानती थी कि राज्य में एक-दो नहीं कई जयचंद हैं, जिनके हाथ में बस हथियार होना चाहिए, वे स्वयं अपने देश को लूटने में लगे हुए हैं। प्रजा की स्वाधीनता छीनने और सब तरह से सत्यानाश करने पर तुले हैं। हिंदुओं के अब तक जितने राज्य छिने हैं सब घर की फूट का कारण हैं। घर के भेदियों को क्षणिक सुख भले ही मिल जाए परंतु आत्मिक सुख कभी नहीं मिलता। उनकी आत्मा कचोटती व छटपटाती रहती है। इसीलिए रानी दुर्गावती सबकुछ जानते हुए भी देशहित में कर्तव्य पथ पर आरुढ़ रही। वह कहती हैं–'मैं क्षत्राणी हूँ। कायर कहलाकर, अपमानित कुत्ते की तरह दुम हिलाकर राज्य रूपी रोटी के टुकड़े को माँगने के लिए अकबर क्या ईश्वर की भी खुशामद मुझे स्वीकार्य नहीं। हमारा काम है स्वाधीनता के लिए ही मरना। रहे स्वाधीन जब तक, बस तभी इस देह को धरना। तनिक जो स्वार्थ के कारण, जो बनकर दास रहते हैं। वे जीते जी ही मरते हैं, दासता दुःख को सहते हैं। जहाँ चलती हों तलवारें, जहाँ भाले चमकते हों। जहाँ कट-कटकर सिर, रणकांति से दूने चमकते हों। उसी तीरथ में मरना, क्षत्रियों का धर्म है पावन। वहीं है मोक्ष का पथ, स्वर्ग का सीधा-सा साधन। राजा कीरत सिंह के नेतृत्व में शेरशाह सूरी से युद्ध इसी ज़ज्बे से जीता गया था। अकबर की कुदृष्टि रानी दुर्गावती पर थी। उसने आसफ़ खाँ के नेतृत्व में युद्ध का धावा बोल दिया। उस समय रानी दुर्गावती के पास बहुत कम सैनिक थे। उन्होंने जबलपुर के पास नरई नाले के किनारे मोर्चा लगाया तथा स्वयं पुरुष वेश में युद्ध का नेतृत्व किया। परंतु इस बार रानी को सफलता नहीं मिली। उन्होंने लुहूलुहान होने पर खुद अपने पर तलवार का वार कर अपनी जीवन लीला समाप्त की। वह कहा करती थीं कि 'जिन सिपाहियों, जागीरदारों ने ऐन वक्त पर पीठ दिखाकर देशद्रोह का परिचय दिया उन्होंने कृतघ्नता का ही परिचय नहीं दिया वरन् मनुष्यता और सदाचार के प्रति विश्वासघात किया है, माँ के दूध को लजाया है। भारत माता उन्हें कभी माफ नहीं करेंगी।' महारानी दुर्गावती चंदेल अकबर के सेनापति आसफ खाँ से अंतिम साँस तक लड़कर, जान गँवाकर सम्मानपूर्वक सदा-सदा के

लिए अमर हो गई। जबलपुर के पास जहाँ यह ऐतिहासिक युद्ध हुआ था, उस स्थान का नाम बरेला है, जो मंडला रोड पर स्थित है। वहीं रानी दुर्गावती की समाधि बनी है, जहाँ गोंड जनजाति के लोग व संपूर्ण भारतवर्ष के लोग जाकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। जबलपुर में स्थित रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय भी रानी के नाम पर रखा गया है। भारत सरकार ने रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस पर एक डाक टिकट जारी कर रानी दुर्गावती को स्मरण किया। जबलपुर में स्थित संग्रहालय का नाम भी रानी दुर्गावती के नाम पर रखा गया। मंडला जिले के शासकीय महाविद्यालय का नाम भी रानी दुर्गावती के नाम पर ही रखा गया है। रानी दुर्गावती की याद में कई जिलों में रानी दुर्गावती की प्रतिमाएँ लगाई गई हैं और कई शासकीय इमारतों का नाम भी रानी दुर्गावती के नाम पर रखा गया है। आज हम सभी गर्व और गौरव के साथ स्मरण करते हुए रानी दुर्गावती के गुणगान इन शब्दों के माध्यम से कर उन्हें श्रृद्धांजलि दे रहे हैं–

रानी दुर्गावती रही भारत संतान।
स्वतंत्रता के लिए जिन्होंने किया तन-मन-धन बलिदान।
छोड़ा कभी न धर्म का मार्ग, कर्मठ बन दी अपनी जान।
भटके जन को मार्ग दिखाया, दी अपने को पहचान।
भवसागर तरने को ले-ले कर्मयोग जलयान।
रानी दुर्गावती रही भारत संतान।

संदर्भ ग्रंथ, समाचार-पत्र और अन्य स्रोत

- अकबरनामा, लेखक अबुल फजल।
- तारीख-ए-फरिश्ता, लेखक फरिश्ता।
- मुन्तखब-उत-तवारीख-बदायूँनी।
- ताम्रपत्र, प्रशस्ति और जनश्रुतियाँ।
- इतिहास संकलन समिति, महाकोशल प्रांत द्वारा नई दुनिया
- पत्र एवं पत्रिका समाचार-पत्र प्रकाशित विभिन्न शोध।

सरोज गुप्ता–अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

पं. दीनदयाल उपाध्याय शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

सागर, म.प्र.